21वीं सदी में भारत के अंतर्राष्ट्रीय संबंधों पर स्वामी विवेकानंद के विचारों का प्रभाव : एक समीक्षात्मक अध्ययन

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद
के सामाजिक विज्ञान संकाय, राजनीति विज्ञान विभाग, में

पीएच.डी. उपाधि हेतु
प्रस्तावित शोध सार

शोधार्थी

अंकित दिवाकर

पंजीयन संख्या : ....

द्वारा

विश्वविद्यालय राजनीति विज्ञान विभाग

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद

शोध निदेशक

डॉ. प्रवीण सिंह

विभागाध्यक्ष, विश्वविद्यालय राजनीति विज्ञान विभाग एवं

प्राचार्य, आर. एस. मोर. कॉलेज, धनबाद

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद

मार्च, 2024

परिचय

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के समकालीन परिदृश्य में, किसी राष्ट्र की विदेश नीति पर दार्शनिक विचारधाराओं के प्रभाव ने वैश्विक चुनौतियों और विकासों के आलोक में नए सिरे से महत्व ग्रहण कर लिया है। भारत की दार्शनिक और आध्यात्मिक विरासत में एक श्रद्धेय व्यक्ति, स्वामी विवेकानन्द, सार्वभौमिक भाईचारे, आध्यात्मिक सद्भाव और मानव सशक्तिकरण पर अपनी कालातीत शिक्षाओं के माध्यम से गहरा प्रभाव डालते रहे हैं। 21वीं सदी की पृष्ठभूमि में, जिसमें तीव्र वैश्वीकरण, भू–राजनीतिक बदलाव और उभरते खतरे शामिल हैं, भारत के अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को आकार देने में विवेकानंद के दार्शनिक विचार प्रासंगिक है।

हाल के वर्षों में कई जटिल वैश्विक समस्याएं देखी गई हैं, जिनमें राष्ट्रों के बीच बढ़ते तनाव, चरमपंथी विचारधाराओं का उदय और पारंपरिक राजनयिक मानदंडों का क्षरण शामिल है। इस संदर्भ में, अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के लिए एक सैद्धांतिक और नैतिक दृष्टिकोण की आवश्यकता और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। स्वामी विवेकानन्द के विचार इन समकालीन चुनौतियों से निपटने के लिए एक सम्मोहक रूपरेखा प्रदान करती हैं, जो आपसी सम्मान, समझ और सहयोग के आधार पर राष्ट्रों के बीच सामंजस्यपूर्ण सह–अस्तित्व की वकालत करती हैं।

इसके अलावा, नई भू–राजनीतिक दोष रेखाओं का उद्भव और वैश्विक समुदाय की बढ़ती अंतर्संबंधता भारत की विदेश नीति के दृष्टिकोण पर फिर से विचार करने और पुनर्मूल्यांकन करने के महत्व को रेखांकित करती है। इस संदर्भ में, भारत की राजनयिक गतिविधियों पर विवेकानन्द के विचार के प्रभाव को समझना नीति निर्माताओं और विद्वानों के लिए समान रूप से अनिवार्य हो जाता है। 21वीं सदी की वैश्विक समस्याओं के आलोक में विवेकानंद की शिक्षा की जांच करके, यह प्रस्तावित शोध समकालीन अंतर्राष्ट्रीय चुनौतियों से निपटने में उनके विचारों की प्रासंगिकता और प्रयोज्यता पर प्रकाश डालना चाहता है।

सार्वभौमिक सद्भाव, मानवतावाद और सामाजिक कल्याण के सिद्धांतों पर आधारित विवेकानंद का दर्शन एक अद्वितीय दृष्टि प्रदान करता है जिसके माध्यम से वैश्विक समुदाय के साथ भारत के जुड़ाव को समझा जा सकता है। विवेकानन्द के विचार और भारत की कूटनीतिक व्यस्तताओं में उनकी प्रतिध्वनि पर गहराई से विचार करते हुए, यह अध्ययन समकालीन भू–राजनीति की जटिलताओं को सुलझाने में कालातीत ज्ञान की स्थायी प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए, दर्शन और कूटनीति के बीच जटिल अंतर्संबंध को उजागर करने का प्रयास करता है। कठोर विश्लेषण और विद्वतापूर्ण जांच के माध्यम से, इस प्रस्तावित शोध का उद्देश्य भारत के अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की बहुमुखी गतिशीलता के बारे में हमारी समझ को समृद्ध करना और वैश्विक कूटनीति को आकार देने में दार्शनिक विचारधाराओं की भूमिका पर व्यापक चर्चा में योगदान देना है।

साहित्य समीक्षा

1. महापात्रा (2017) स्वामी विवेकानन्द के राजनीतिक दर्शन पर प्रकाश डालते है तथा उनकी वैचारिक नींव और उनके निहितार्थों के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।[1]

2. चक्रवर्ती (2022) सांस्कृतिक और धार्मिक विविधता के बीच इसकी प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए, दक्षिण एशियाई समाजों में सहिष्णुता की विवेकानंद की धारणा और इसके समकालीन महत्व की जांच करते हैं।[2]

3. राव (1992) ने विवेकानंद के राजनीतिक विचारों का व्यापक अध्ययन किया है, जो उनके विचारों और उनके संभावित अनुप्रयोगों की सूक्ष्म समझ प्रदान करता है।[3]

4. डेव (2016) आधुनिक राजनीति में विवेकानंद के योगदान पर ध्यान केंद्रित करते है, विशेष रूप से युवा जुड़ाव और सशक्तिकरण पर उनके प्रभाव पर जोर देते है।[4]

5. सीताराम (2009) सामाजिक परिवर्तन के लिए उनके दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हुए, विवेकानन्द के दर्शन के समाजवादी और मानवतावादी आयामों की पड़ताल करते है।[5]

6. किशोर (1994) विवेकानन्द के राष्ट्रवाद का विश्लेषण करते हुए राष्ट्र–निर्माण और देशभक्ति पर उनके दृष्टिकोण की अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।[6]

7. जोशी (2021) युवाओं और राष्ट्रवाद पर विवेकानंद के विचारों की जांच करते हैं, सामूहिक पहचान को आकार देने और अपनेपन की भावना को बढ़ावा देने में उनके महत्व पर प्रकाश डालते हैं।[7]

8. धीरज (2022) राष्ट्र–निर्माण के ढांचे के भीतर विवेकानंद के विचारों को प्रासंगिक बनाते हैं, सामाजिक–राजनीतिक विकास के लिए उनके निहितार्थों को स्पष्ट करते हैं।[8]

9. दत्त, (2011) विदेश नीति, शासन और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों जैसे व्यापक विषयों के साथ इसके अंतर्संबंधों का पता लगाने का प्रयास करते है।[9]

शोध समस्या का विवरण

- 21वीं सदी में भारत के अंतर्राष्ट्रीय संबंधों पर स्वामी विवेकानन्द के विचारों के स्थायी प्रभाव की खोज करना।
- भारत की कूटनीति पर स्वामी विवेकानन्द के विचारों की प्रासंगिकता की जांच करना।

- स्वामी विवेकानन्द के सार्वभौमिक भाईचारे और सांस्कृतिक आदान–प्रदान के सिद्धांत समकालीन भारतीय विदेश नीति को किस हद तक प्रभावित करते हैं इसकी जाँच करना।
- भारत की समकालीन विदेश नीति के क्रियान्वयन में स्वामी विवेकानन्द के सिद्धांतों को लागू करने में आने वाली चुनौतियों का आकलन करना।

शोध का उद्देश्य

1. 21वीं सदी में भारत के अंतर्राष्ट्रीय संबंधों पर स्वामी विवेकानंद के विचारों के प्रभाव की समीक्षा करना।

2. भारत की विदेश नीति निर्माण और कार्यान्वयन प्रक्रियाओं में स्वामी विवेकानन्द के आदर्शों को एकीकृत करना।

3. वैश्विक समुदाय एवं अन्य देशों के साथ संबंधों को आकार देने में स्वामी विवेकानन्द के दार्शनिक एवं मानवतावादी नीतियों का विश्लेषण करना।

4. स्वामी विवेकानन्द की विरासत किस प्रकार उभरती अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में भारत की भूमिका और जिम्मेदारियों को आकार दे रही है, इसकी व्यापक समझ प्रदान करना।

5. नेतृत्व और शासन पर स्वामी विवेकानन्द के दृष्टिकोण का विश्लेषण और वैश्विक मंचों पर भारत की कूटनीतिक पहलों और वार्ताओं में उनके प्रतिबिंब को देखने का प्रयास करना।

परिकल्पना

1. 21वीं सदी में भारत के अंतर्राष्ट्रीय संबंधों पर स्वामी विवेकानंद के विचारों का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। उनके विचारों से भारत विश्व में सार्वभौमिक सद्भाव, मानवतावाद और सामाजिक कल्याण की भावना का प्रसार करने में सफल हुआ है।

उप-परिकल्पना

1. स्वामी विवेकानन्द की "शक्ति और सद्भाव" की अवधारणा भारत की रणनीतिक साझेदारियों को प्रभावित करती हैं।

2. पूर्वी और पश्चिमी दर्शन के संश्लेषण पर स्वामी विवेकानन्द के विचार वैश्विक संस्थानों के साथ भारत के जुड़ाव का मार्गदर्शन करती है।

3. स्वामी विवेकानन्द की आत्मनिर्भरता की वकालत अंतर्राष्ट्रीय मामलों में भारत की रणनीतिक स्वायत्तता की खोज को प्रेरित करती है।

4. भारत को "विश्व गुरु" के रूप में देखने का स्वामी विवेकानन्द का दृष्टिकोण देश के सांस्कृतिक कूटनीति प्रयासों को प्रभावित करता है।

शोध प्रविधि

प्रस्तावित शोध अध्ययन **गुणात्मक** प्रवृत्ति का है। जिसमें **ऐतिहासिक, वर्णनात्मक** एवं **विश्लेषणात्मक** पद्धति का प्रयोग किया जाएगा। प्रस्तावित शोध अध्ययन में प्राथमिक स्रोत एवं द्वितीय स्रोत दोनों का प्रयोग किया जाएगा।

प्राथमिक स्रोत के रूप में स्वामी विवेकानंद के लेखन, भाषण एवं पत्रों को शामिल किया जाएगा। एवं **द्वितीयक स्रोत** के रूप में पुस्तक, पत्र पत्रिकाओं में छपे लेख, विभिन्न प्रकाशित और अप्रकाशित शोध कार्य और डिजिटल मीडिया का उपयोग किया जाएगा।

इसके अलावा आवश्यकता होने पर **साक्षात्कार विधि** का भी सहारा लिया जाएगा।

शोध का महत्व

प्रस्तावित शोध पर्याप्त शैक्षणिक, व्यावहारिक और सामाजिक महत्व रखता है। अकादमिक रूप से, यह समझने में योगदान देता है कि दार्शनिक विचारधाराएँ विदेश नीति निर्णयों को कैसे आकार देती हैं। स्वामी विवेकानन्द की शिक्षाओं के प्रभाव की जांच करके, अध्ययन कूटनीति में दार्शनिक विचार की भूमिका पर जोर देता है।

प्रस्तावित शोध सांस्कृतिक और सामाजिक रूप से, स्वामी विवेकानन्द के दर्शन की खोज सार्वभौमिक भाईचारे, आध्यात्मिक सद्भाव और सामाजिक कल्याण जैसे मूल्यों पर जोर देती है। विवेकानन्द की शिक्षाएँ विश्व स्तर पर गूंजती हैं, जो कूटनीति पर दार्शनिक विचारधाराओं के व्यापक निहितार्थों की अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं। यह अध्ययन अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में भारत की भूमिका के पुनर्मूल्यांकन को प्रेरित करती है, जो राजनयिक व्यस्तताओं में नैतिक विचारों पर जोर देती है।

संक्षेप में, यह प्रस्तावित शोध अकादमिक रूप से समृद्ध और व्यावहारिक रूप से महत्वपूर्ण है। यह 21वीं सदी में कूटनीति की गहरी समझ प्रदान करता है और विश्व मंच पर राष्ट्रों की बातचीत का मार्गदर्शन करने में दार्शनिक सिद्धांतों के महत्व को रेखांकित करता है।

<u>शोध की सीमाएँ और भविष्य के कार्य</u>

शोध की सीमाएँ

1.प्रस्तावित शोध स्वामी विवेकानन्द की चिंतन के विशाल दायरे और भारत के समकालीन अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की जटिलताओं के कारण बाधित हो सकता है।

2.मूल साहित्यों के उचित अनुवाद की समस्या।

3.पूर्व शोधकर्ता के व्याख्या पूर्वाग्रह और विवेकानन्द की चिंतन की व्याख्या में व्यक्तिपरकता का जोखिम, अध्ययन की निष्पक्षता को प्रभावित कर सकता है।

4.भारत के संदर्भ से परे निष्कर्षों को सामान्य बनाना, इसकी ऐतिहासिक और भू–राजनीतिक परिस्थितियों की विशिष्टता के कारण भी मुश्किल हो सकता है।

भविष्य के कार्य

1.विदेश नीति पर अन्य दार्शनिक प्रभावों के साथ तुलनात्मक विश्लेषण।

2.विवेकानंद के विचारों से प्रभावित विशिष्ट राजनयिक प्रकरणों की जांच करने वाले केस अध्ययन शामिल हो सकते हैं।

3.विवेकानन्द की शिक्षा द्वारा सूचित भारत की सांस्कृतिक एवं कूटनीति पहल की प्रभावशीलता का आकलन नीति निर्माताओं और राजनयिकों के लिए व्यावहारिक अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है।

भविष्य के ये कार्य भारत के अंतर्राष्ट्रीय संबंधों पर विवेकानन्द के प्रभाव के बारे में हमारी समझ को अधिक सटीकता से बढ़ा सकते हैं।

संभावित अध्यायीकरण

- प्रस्तावना

अध्याय 1: स्वामी विवेकानन्द के दार्शनिक योगदान

अध्याय 2: 21वीं सदी में भारत की विदेश नीति : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

अध्याय 3: भारत की कूटनीति पर स्वामी विवेकानन्द के विचारों का प्रभाव

अध्याय 4: भारत के अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में विवेकानन्द के सिद्धांतों का अनुप्रयोग

अध्याय 5: स्वामी विवेकानंद के विचारों को लागू करने हेतु रणनीतिक स्वायत्तता के अवसर, चुनौतियाँ एवं बाधाएँ

- निष्कर्ष

सन्दर्भ–सूची

1. महापात्रा, के. (2017). *पॉलीटिकल फिलासफी ऑफ स्वामी विवेकानंद.* http://hdl.handle.net/10603/129866

2. चक्रवर्ती, के. (2022). *अंडरस्टैंडिंग द आइडिया ऑफ टोलरेंस ऑफ विवेकानंद क्वेस्ट फॉर कंटेंपरेरी रेलीवेंस इन साउथ एशियन सोसाइटी.*

http://hdl.handle.net/10603/499557

3. राव, बी. एस. (1992). *स्वामी विवेकानंद अ स्टडी ऑफ हिज पॉलीटिकल आईडियाज.* http://hdl.handle.net/10603/400724

4. डेव, आर. (2016). *कॉन्ट्रिब्यूशन ऑफ स्वामी विवेकानंद इन मॉडर्न पॉलिटिक्स इन स्पेशल रेफरेंस टू यूथ.*

http://hdl.handle.net/10603/323639

5. सीताराम, (2009). *स्वामी विवेकानंद का समाजवादी एवं मानववादी दर्शन.*

http://hdl.handle.net/10603/295072

6. किशोर, एम. के. (1994). *स्वामी विवेकानंद का राष्ट्रवाद.*

http://hdl.handle.net/10603/526319

7. जोशी, आर. (2021). *स्वामी विवेकानंद की युवा दृष्टि और राष्ट्रीयता.*

http://hdl.handle.net/10603/372343

8. धीरज, (2022). *राष्ट्र निर्माण के संदर्भ में स्वामी विवेकानंद का चिंतन.*

http://hdl.handle.net/10603/500868

9. दत्त, भी. पी. (2011). *इंडियाश्ज फॉरेन पॉलिसी सिंस इंडिपेंडेंस.*